अध्याय चालीसवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"जो स्वयं ही सिर पर प्रपंच का भार उठाता है, उसे सतगुरुजी का बोध कैसे प्राप्त होगा? ऐसे मनुष्य को नामस्मरण (नाम जपना) करके चित्त शुद्धि करा लेने के पश्चात सतगुरुजी उद्धरते हैं।"

हे दयासागर सतगुरुनाथजी, आप ही के कारण सभी जीवात्माओं को जीवन का महत्व तथा मनुष्य के जन्म का लक्ष्य इन बातों की प्रतीति होती हैं, ऐसे ही लोगों को आप ब्रह्मज्ञान का बोध करते हैं, जिससे उनका मन पूर्ण रूप से परमार्थ विद्या की ओर आकर्षित होता है। ऐसे लोगों के मन में स्थित व्दैत की भावना पूर्ण रूप से नष्ट हो जाती है, विषयोपभोगों से संबंधी सभी वस्तुओं को भुलाया जाता है, उनके ह्रद्य में शुद्ध अव्दैत का ज्ञान स्थिर होता है और वे आध्यात्मिक मार्ग पर चलने लगते हैं। जहाँ पैरों के न होते हुए भी मनुष्य चलता है, जिव्हा के न होते हुए भी बोलता है, दृष्टि के न होते हुए भी स्वयं ही स्वयं को देखता है, इस प्रकार की स्वरूप प्राप्ति निश्चित रूप से गुरु कृपा के बिना संभव नहीं होती, इसीलिए भाव भक्ति से स्वरूप प्राप्ति के लिए गुरुनाथजी की शरण में जाना चाहिए। विषयासक्ति में नखशीख डूबे हुए लोग पूछते हैं की किसलिए चाहिए वह स्वरूप प्राप्ति, उसके अप्राप्ति से खेद करने से क्या होने वाला है? विषयासक्ति से जो लगाव है, क्या वह काफ़ी नहीं है? ऐसे लोगों से सतगुरुजी कहते हैं, "आप सभी सुख चाहते हैं और सुख के लिए आप विषयोपभोगों को भजते हैं (यानी उन्हीं का ध्यान करते हैं)। विषयोपभोग क्षणभंगुर होने के कारण उन में दुख है ही। अगर सुख में थोड़ा भी दुख मिश्रित हो तो भी लोग उसका त्याग करते हैं| परंतु जिस सुख का कभी भी विनाश नहीं होता, उसे स्वरूपानंद कहते हैं और एकबार उसे प्राप्त कर लेने के पश्चात जीवात्मा विषयोपभोगों से ऊब जाता है। इसीलिए, जिससे पूर्ण रूप से दुख नष्ट होता है, ऐसे स्वरूप प्राप्ति की आवश्यकता है। जिस सुख का हम निद्रा में अनुभव करते हैं, उसकी स्मृति मन में रखिए। क्योंकि ऐसी निद्रा में लेश भर भी दुख नहीं होता, जहाँ मन की वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और इस स्थिति का जो साक्षी है, उसे हमें जानना चाहिए।" सतगुरुनाथजी की बाते सुनकर शिष्यों ने

"धन्य, धन्य" कहकर गर्जना की तथा उन्होंने आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग दिखाया इसलिए प्रेम से उनके चरण छुए। ऐसे दयाघन सतगुरुजी की जीवनी सुनिए, जिसके केवल सुनने से भी जड़ जीवात्माओं का उद्धार होता है।

प्रतिवर्ष शिवरात्री के समारोह के लिए दूर दूर के राज्यों से हजारो लोग बैलगाड़ियों से यात्रा करके हुबली आते थे। एकबार एक गाँव से अनेक महिलाएँ तथा छोटे बच्चों को चार बैलगाड़ियों में बिठाकर चार मर्द पैदल चलते हुए समारोह के लिए निकल पड़े। बैलगाड़ियों में बैठी हुई महिलाएँ सोने के कंगन, चूड़ियाँ तथा अन्य अलंकार पहनकर सजधजकर सिद्धारूढ़जी का स्मरण करते हुए तथा उनका स्तवन करते हुए निकली थी। इस प्रकार यात्रा करते करते शाम हो गयी, मार्ग पर उन चार मर्दों के अलावा अन्य यात्री दिखाई नहीं पड़ रहा था। अचानक आसपास के घने पेडों के पीछे से चौबीस बटमार क्रूरता पूर्वक चीखें मारते हुए उनकी ओर दौइते हुए चले आए। उनके हाथों में विविध प्रकार के शस्त्र होकर उनके चेहरे भयानक थे; हाथों में पकडे हुए शस्त्रों को घुमाते हुए और मुख से "पकड़ो, मारो, काटो" इस प्रकार चिल्लाते हुए आने वाले बटमारों को देखकर सभी के कलेजे थरथर काँपने लगे। दौड़ते हुए आकर बटमारों ने पहले चार मर्द तथा बैलगाड़ियाँ हाँकनेवालों को पकड़कर एक एक पेड़ के साथ कसकर बाँध दिया। बैलगाड़ियों में केवल महिलाएँ तथा छोटे बच्चे थे; बटमारों को देखकर महिलाओं ने रो रोकर आक्रोश किया और सतगुरुजी की बार बार दुहाई देने लगी| कुछ महिलाएँ गहने छुपाने लगी, कुछ छोटे बच्चों को आँचल में छुपाने लगी, कुछ महिलाएँ "बच्चों को मत रुलाओ" कहने लगी तो कुछ महिलाएँ स्वयं ही जोर जोर से रोने लगी। एक महिला ने कहा, "इसी भय के कारण मैं घर में ही गहने रखने वाली थी, परंतु किस को पता था की इस प्रकार अचानक बटमार आएँगे? अब तो ऐसा लगता है की केवल तीर्थाटन के लिए निकलने के कारण ही हम अपने गहने गँवाएँगे।" दूसरी महिला ने कहा, "जब सिद्धारूढ़ स्वामीजी के समारोह के लिए हम निकले हैं, तब उनके बिना कौन हमारी लाज रखेगा?" सभी महिलाएँ कहने लगी, "सतगुरुनाथजी दुहाई हो! अनाथों के नाथ तथा सभी की रक्षा करने वाले हे भगवान, आप के सिवाय यहाँ हमारी रक्षा करने वाला कोई भी दिखाई नहीं पड़ रहा है। बटमारों ने मर्दों को

पेड़ों से बाँध दिया हुआ अगर आप शांति से देखते रहेंगे तो हमारी रक्षा कौन करेगा? हे दयालु सिद्धनाथजी, जरा सोचकर देखिए! हजारो भक्त आप से मिलने आते हैं, आप उन्हें मिले बिना यहाँ नहीं आ पाएँगे, परंतु हम पूर्ण रूप से आप की शरण में आए हुए हैं, इसलिए किसी भी प्रकार, तत्क्षण आकर आप हमारी रक्षा कीजिए। बटमार हमें लूट रहे हैं तथा हमें जान से मारने की धमकी दे रहे हैं, छोटे बच्चे उनका रौद्र रूप देखकर थर थर काँप रहे हैं। हे भक्तपालक करुणाकर सतगुरुनाथजी तेजी से आईए, आप के बिना अन्य कौन हमारी रक्षा करेगा? हे सतगुरुदेवा, अगर आप हमारी रक्षा करेंगे तो हम आजीवन आप की सेवा करेंगे और आप भक्तों की हमेशा संकट के समय में रक्षा करते हैं, ऐसे आप की महिमा के स्तुति गीत हम गाते रहेंगे।" ऐसा कहते हुए महिलाएँ बच्चों को हृदय से लगाकर आर्तता से आक्रोश करती हुई सतगुरुजी की दुहाई देने लगी।

इतने में एक अचरज हुआ। बरसात के मौसम में काले घनघोर गतिशील बादल एक दूसरे के साथ टकराने से जो गड़गड़ाहट होती है, उसी प्रकार की कलेजा काँपने वाली भीषण गर्जना सभी को सुनाई दी; आश्चर्य से सभी जमीन में गड़े जाने के समान अपनी ही जगह पर खड़े रह गए। उस समय बटमार बैलगाड़ियों पर चढ़कर अंदर बैठी महिलाओं को खींचकर बाहर निकाल रहे थे, गला चीरने का भय दिखाकर उनके गले में पहनी हुए सोने की मालाएँ, कंठी, मुहरों की मालाएँ आदि तोड़कर ले रहे थे; ऐसे नीच कर्मों में व्यस्त बटमारों ने वह गर्जना सुनी और मुड़कर पूर्व दिशा में देखा तो उन्हें एक भयंकर आकृति दिखाई पड़ी। ताड़ के वृक्ष के समान अति लंबा एक मनुष्य उन्होंने देखा। उसके बाल मानो पेड़ों की टहनियाँ ही थे! उसकी आँखें शुद्ध सूर्य के समान थी। तेजस्वी शरीर होने वाले उस व्यक्ति का मुख भयानक होकर, उसके दाँत तीक्ष्ण थे, भड़कीले लाल रंग की जीभ हिल रही थी और तलवार के समान धारदार नाखून थे। उस अद्‌भुत रूप को देखकर विस्मित हुए बटमारों को लगा की एक महाराक्षस ही "आ" फैलाकर उन्हें निगलने हेतु आगे बढ़ रहा है। मजे की बात यह है की वही आकृति बैलगाड़ियों में बैठी महिलाओं को बिलकुल सौम्य दिखाई दी; वह रूप सतगुरुजी का ही होगा ऐसा उन्हें लगा, केवल फर्क इतना ही था की

वह व्यक्ति अत्यंत लंबी थी। वे महिलाएँ कहने लगी हमारा समर्थक आया, जिसके समान इस पृथ्वी पर कोई भी नहीं है ऐसे सिद्धसतगुरुजी हमें प्रसन्न हुए और उन्होंने हमारी रक्षा की।

विस्मित बटमारों ने उस भयानक रूप को देखते ही उनके पाँव तले से जमीन खिसक गयी, वे धीरज खो बैठे तथा उनके हाथों से सारे शस्त्र गिर गए। उनके हाथ पाँव थर थर काँपने लगे। जब उन्होंने भाग जाने का प्रयास किया, तब उनके पाँव थर थर काँपने के कारण वे ठिठकर गिरने लगे। स्वयं के तेज से पराक्रमी तथा बटमारों को अत्यंत क्रोधित दिखाई पड़ने वाला वह महाकाय पुरुष उनके समीप आया। उस समय दो बटमार बैलगाड़ी पर चढ़रहे थे, उन दोनों को उस उग्र पुरुष ने लीलया एक हाथ से पकड़कर दूर एक पेड़ पर फेंक दिया; हाथ में मिली हुई उस पेड़ की शाखाएँ पकड़कर वे बटमार वहीं लटकते रहे। वह भयानक दृष्य देखकर अन्य बटमार जमीन पर लेटकर दीनता से कहने लगे, "हे महास्वामिनी देवी भद्रकाली, अगर इस उग्र पुरुष के हाथों से हम बच पाएँ तो तुम्हारे लिए एक मंदिर बनवाएँगे। तुम्हारी भक्ति करके तुम्हें आनंदित करेंगे। हे माता, जल्दी आ जाईए और हमें इस भूत से छुड़ाईए, हम नें उतारी हुई मनौती हम पूरी करके आमरण तुम्हारी भक्ति करेंगे।" इतने में वह उग्र पुरुष उनके समीप आकर बोला, "आप भद्रकाली से प्रार्थना कर रहे हैं, हैं न? वह तो मेरे पिछे ही खड़ी है, ऐसा कहकर मुड़कर उसने उन्हें देवी के दर्शन कराए। उस समय भद्रकाली ने कहा, "आप इनके भक्तों को कष्ट देते रहते हैं, तो मैं आप की रक्षा कैसे करूँ? ये सभी देवताओं का आधारशैल होकर इन्ही की शक्ति से हम देवताओं को शक्ति मिलती हैं। इनकी सत्ता से हमारा आविष्करण होता है। ये सभी के अंतर्यामी हैं तथा इनके सिवाय अन्य कोई भी श्रेष्ठ हैं ही नहीं। ऐसे इस जगदीश के भक्तों को तीर्थाटन जाते समय मार्ग में आप रोकते हैं, तो फिर कौन आप की रक्षा करेगा? इसलिए, अब आप जल्द से जल्द हुबली जाकर सिद्धारूढ़जी से मिलें तथा पूर्ण रूप से उनकी शरण में जाईए, तब तक ये उग्र पुरुष आप को छोड़ने वाला नहीं है।" ऐसा भद्रकाली ने कहा। तब वह उग्र पुरुष फिर एकबार उन बटमारों के सम्मुख हुआ और उसने सभी बटवारों को उठाकर हुबली के मार्ग पर भगा दिया। उसपर उनके पाँव में शक्ति का संचार हुआ और

वे उस मार्ग से सिद्धाश्रम की ओर दौड़ने लगे; सिद्धनाथजी के चरण छूने तक वह उग्र पुरुष उनका पीछा कर ही रहा था। सतगुरुजी का चेहरा देखकर वे फिर से थर थर काँपने लगे, क्योंकि वे ऐसे दिखाई दे रहे थे की मानो उसी उग्र पुरुष ने सौम्य रूप धारण करके वह शांति से वहाँ बैठा हो। उस उग्र पुरुष का रूप भी ऐसा ही था, परंतु हँसमुख चेहरे वाला यह मनुष्य भी हमारे प्राण ले लेगा ऐसा विचार मन में आते ही वे वापस मुड़ गए। उन्होंने पिछे मुड़करे देखा तो फिर से वही भयानक पुरुष उनके पीछे खड़ा था! अब सतगुरुजी की शरण जाए बगैर वह उग्र पुरुष किसी भी प्रकार हमें नहीं छोडेगा, यह समझकर वे फिर से सतगुरुजी के पास आए और बोले, "हे दयानिधी, हमारी रक्षा कीजिए। आप का भूत हमें निगलने के लिए बड़े आवेग के साथ हमारा पिछा कर रहा है।" यह सुनकर सतगुरुजी ने कहा, "मेरे भाई, अब आप सारा भय त्याग दीजिए। आप के दुष्कर्म ही उस भीषण रूप में आकर आप को डरा रहे हैं। आज से चोरी करना छोड़ दीजिए, आप का जो भी धर्म हो, उसका पालन कीजिए, ताकि काम, क्रोध जैसे माया से निर्मित सारे भ्रम दूर हो जाएँगे।" ऐसे उनके दयालु शब्द सुनकर उनका मन भक्ति की ओर मुड़ा और उन्होंने कहा, "हे करुणाघन, आप ने हमें पाप करने से बचाया। आप के चरणों की ऐसी महिमा है की जो एकबार उन चरणों में सिर रखता है उसके सभी दुर्गुण तथा दुष्टता अपने आप ही नष्ट होते हैं और वह सद्‌गुणी होकर व्यवहार करने लगता है।" उन दिनों से वे सभी बटमार सतगुरु भक्त हो गए तथा अत्यंत प्रेम पूर्वक गुरु सेवा करने लगे और मार्ग से आने जाने वाले लोगों की रक्षा भी करने लगे।

इधर मार्ग में बैलगाड़ियाँ वहीं छोड़कर बटमार हुबली गए हुए देखकर आनंदित हुई महिलाओं ने सतगुरुजी का स्तुति गीत गाना शुरु किया। उन्होंने कहा, "हे ईश्वरावतार सिद्धनाथजी, आप की महिमा हम नहीं समझ सकते। ऐन मौके पर आकर आप ने हमारी रक्षा की, आप की महिमा का बयान कैसे करें, यही हमारी समझ में नहीं आ रहा है। संकट में हमें सँभालकर, आप संकट के समय में भक्तों की रक्षा करते हैं, यह आप का बाना आप ने सिद्ध कर दिखाया; आप की कीर्ति से चारो दिशाएँ गूँज रही हैं।" उसपर उन महिलाओं ने पेड़ से बंधे मर्दों को छुड़ाया और वे सभी हुबली पहुँचकर प्रेम पूर्वक सतगुरुजी से मिले।

उन्होंने पूर्ण वृत्तान्त सतगुरुजी से बयान किया; कृतज्ञता पूर्वक उन्होंने कहा, "गुरुनाथजी, हमारी रक्षा करने हेतु, आप ने कैसे वह अद्‌भुत रूप धारण किया। हे गुरुमाता, आप ने हमारे लिए कितने कष्ट उठाएँ!" सतगुरुजी ने सौम्यता से कहा, "आप के मन का शुद्ध भाव तथा आप ने सतगुरुजी से की हुई प्रार्थना के कारण, आप की रक्षा करने के लिए वह रूप प्रकट हुआ। ये देखिए, वे बटमार यहीं हैं। आप के कारण इन्हें साधुता प्राप्त हुई और वे सतगुरु सेवा करने लगे; सतगुरुजी ने यह कैसा आश्चर्य दिखाया!" सभी लोगों ने इस कहानी को सुनते ही "सतगुरुजी की महिमा का बयान करना हम से कभी भी संभव नहीं है" ऐसा कहकर सतगुरुजी की जोर जोर से जयजयकार की।

अब इस कहानी का लक्ष्यार्थ सुनिए। वे सभी जीवात्माएँ अंतरात्मा से मिलने मन की बैलगाड़ियों में बैठकर यात्रा करने निकले। उन्होंने चार मर्दों के रूप में चार प्रकार की उपासनाएँ साथ ले ली; वे महिलाएँ ही वे जीवात्माएँ हैं। दसवे अध्याय में बयान किए गये चौबीस तत्व रूपी बटमार स्वरूप रूपी गहने चोरी करने आए। उन बटमारों ने चार उपासना रूपी मर्दों को प्रपंच के पेडों से बाँध दिया; उस समय, जीवात्माओं ने भगवान से प्रार्थना करने के कारण, वह रुद्र रूप में प्रकट हुआ। जीवात्माओं ने जिससे प्रार्थना की थी, वही पच्चीसवाँ आत्मतत्व था, उसके प्रकट होते ही अन्य चौबीस तत्व असहाय हो गए। उन चौबीस तत्वों ने प्रकृति रूपी (पंचतत्व) भद्रकाली से प्रार्थना की, उस समय भद्रकाली आत्मतत्व होने वाले शरीर में प्रकट हुई तथा आत्मा के सहारे ही रही; आत्मा की सहायता के बिना उन चौबीस तत्वों की कौन रक्षा करेगा? भद्रकाली ने उन चौबीस तत्वों को कहा की वे हुबली के सगुण ब्रह्म रूपी सिद्धसतगुरुजी की शरण में जाएँ और उन्ही के पास सुख से रहें। वे चौबीस तत्व सगुण ब्रह्म के पास जाते ही, वह रुद्र रूप ही सौम्य रूप धारण करके बैठा हुआ उन्हें दिखाई पड़ा, इसलिए वे भयभीत होकर वापस लौटने लगे। परंतु, उन्हें चारो ओर वहीं रुद्र रूप ही दिखाई देने के कारण वे फिर से सगुण ब्रह्म के पास गए और उससे एकरूप होकर रह गए। चौबीस तत्वों की मलिनता नष्ट होते ही, इधर जीवात्माओं ने चारो उपासनाओं को छुड़ाया। उसपर आत्मा तक जाने वाला उनका मार्ग सुरक्षित हो गया। वे जीवात्माएँ अंतरात्मा से आकर मिलते ही

उन्होंने उन चौबीस तत्वों को उसी (आत्मा) की सेवा करते हुए देखा। इस प्रकार जीव शिव एकरूप होने के कारण चारो ओर आनंद फैल गया। सतगुरुनाथजी स्वयं ही ब्रह्मानंद होकर जीवात्माओं को इस भव सागर के पार लगाने के लिए जीवधारी होकर अवतरित हुए हैं। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह चालीसवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥